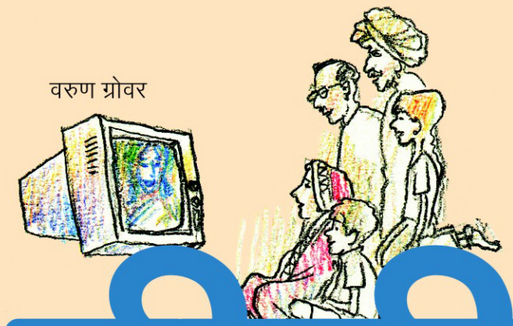

टीवी

वरुण ग्रोवर

बात सिर्फ इतनी-सी थी कि गोपू को टीवी देखना था। और यही सोचकर तीनों निकल पड़े थे।

गोपू का गाँव पहाड़ के उस तरफ था जहाँ टीवी नहीं आता था। शाम को डूबने से पहले सूरज पहाड़ के सबसे ऊपर लगे उस बड़े-से टॉवर की नोक पे कुछ पलों के लिए टिक जाता था। गोपू को पता था कि उसी टॉवर से टीवी आता है। “वो टावर अभी हमारे गाँव में टीवी नहीं देता... वरना चुन्नी के पिता जी ने तो बक्सा और एन्टीना, दोनों खरीद लिए हैं।” गोपू ने लल्लू को अपनी माँ के लहज़े में समझाते हुए कहा।

गोपू को उसके बाबा ने पहाड़ के उस पार वाले गाँव में टीवी दिखाई थी – अपने दोस्त मनोहर के घर। गोपू ने उस टीवी में 26 जनवरी की परेड देखी थी... बड़ी-बड़ी तोपें, नाचते लड़के-लड़कियाँ, झाँकियाँ, और पता नहीं कहाँ से आती एक आवाज़ जो सारा दृश्य समझा रही थी। जादू था जादू!

तो गोपू ने यह बात अपने दोस्त लल्लू को और लल्लू ने चुन्नी को बताई। लल्लू और चुन्नी को दूसरे गाँव जाकर टीवी देखने का गोपू का आइडिया पसन्द आया। ज़्यादा देर नहीं लगेगी, इसका गोपू को अन्दाज़ा था। दोपहर को निकले तो शाम तक वापस आ जाएँगे। चुन्नी यह बात किसी को ना बताए इसलिए गोपू ने उसको दो मकोड़ों की कसम भी खिलाई। चुन्नी को मकोड़े बहुत पसन्द थे और उनकी झूठी कसम वो कभी नहीं खाती थी। और यूँ, अपनी-अपनी माँओं के सोते ही, तीनों टीवी वाले पहाड़ की तरफ निकल पड़े।

बड़ी मुश्किल से पहाड़ चढ़कर उस पार पहुँचे ही थे कि अचानक सामने बड़ी-सी बस आ गई। चुन्नी तो आगे निकल गई पर गोपू और लल्लू ठगे से खड़े रह गए। बस वाले ने झटके से ब्रेक लगाई और मुँह बाहर निकालकर फटकारा भी। चुन्नी ने भी मौका देखकर डाँट लगा दी और अब से हाथ पकड़कर संग चलने को कहा।

मनोहर चाचा का गाँव अब दूर नहीं था। पहाड़ों में रस्ता ढूँढना नहीं पड़ता, खुद बन जाता है। गोपू को पता था कि इस मोड़ के थोड़ा आगे सब्ज़ी मंडी है। उसी के पीछे वाले रस्ते से वो घर आता है जहाँ उसे टीवी के दर्शन हुए थे। सब्ज़ी मंडी में आज बहुत भीड़ थी। चुन्नी थोड़ा डर गई। गोपू ने उसका हाथ पकड़ लिया और उसे टीवी के जादू के बारे में बताने लगा। गोपू को मनोहर चाचा के घर की पहचान थी क्योंकि उसकी छत पर एक सुन्दर-सा, लहराता एन्टीना लगा हुआ था। पर यह क्या? इस सड़क की तो हर मुंडेर पर वैसे ही एन्टीना था! गोपू ने एक-दो घरों में झाँककर पहचानने की कोशिश भी की लेकिन यहाँ तो सब घर भी एक से थे। और एन्टीना... यही तो उसकी निशानी थी।

अब गोपू की भी रुलाई छूट गई। उसे रोता देख चन्नी और लल्लू भी रोने लगे। बीच सड़क में तीन बच्चों को रोता देख तुरन्त ही लोग जमा हो गए और सवाल एवं दुलार बरसाने लगे। गोपू ने बताया कि वे लोग मनोहर चाचा के घर टीवी देखने आए थे। लेकिन यहाँ तो सबके घर ही टीवी है। चुन्नी ने कहा कि ये गोपू का ही आइडिया था। लल्लू ने कहा कि उसे अब टीवी नहीं देखना, घर जाना है। जल्दी ही मनोहर चाचा भी आ गए जो हैरान थे कि तीन छोटे बच्चे इतनी दूर से टीवी देखने आए हैं।

तीनों के घर खबर भिजवा दी गई कि परेशान ना हों। बाबा भी आ गए और तय हुआ कि आज टीवी देखकर ही वापस जाएँगे। तीनों चाव से बैठे और टीवी का बटन दबाया गया। एक जादुई आवाज़ आई और बक्से के काँच पर हल्की-सी रोशनी की हलचल हुई... गोपू की आँखें चौड़ी हुई पर तभी, बिजली चली गई।

तो ये थी गोपू की कहानी! अब इसी कहानी को अगर सिनेमा के पर्दे पर दिखाना हो तो सोचो क्या करना पड़ेगा? किताब में लिखी कहानी और सिनेमा में दिखाई गई कहानी में सबसे बड़ा फर्क पता है क्या है? किताब की कहानी में एक अदृश्य आवाज़ हमेशा तुम्हें कहानी सुनाती रहती है। बताती है कि किरदार क्या सोच रहा है, कहाँ जा रहा है वगैरह। जबकि सिनेमा की कहानी में यह सब किरदार को खुद करना पड़ता है। कोई छुपी हुई आवाज़ नहीं होती – सिर्फ दृश्य और किरदार की कही हुई बातें (डायलॉग) होते हैं। और इन दृश्यों और डायलॉग को जोड़कर बनती है सिनेमा की कहानी, जिसे हम पटकथा या स्क्रीन-प्ले कहते हैं। और समझने के लिए, चलो गोपू की कहानी का स्क्रीन-प्ले देखते हैं।

टीवी की पटकथा

सीन 1. गोपू के घर के बाहर की कच्ची सड़क। दोपहर के दो बजे हैं।

पहाड़ी इलाका। दूर-दूर तक फैले पहाड़ दिख रहे हैं। करीबन 8-10 साल की उम्र के तीन बच्चे – गोपू, चुन्नी और लल्लू कच्चे रास्ते पर खड़े हैं। गोपू देखने से ही बाकी दोनों पर हावी लगता है। वह ज़मीन पर झुका है और कुछ उठाने की कोशिश कर रहा है। उसके हाथ में मकोड़ा है।

गोपू : (चुन्नी को मकोड़ा पकड़ाते हुए) ये ले... तेरा प्यारा मकोड़ा। अब खा इसकी कसम!

चुन्नीः (मुस्कुराकर मकोड़ा पकड़ते हुए) कैसे खानी है?

गोपू : अरे जैसे मास्टरजी बुलवाते हैं। बोल, “मैं कसम खाती हूँ...”

चुन्नीः मैं कसम खाती हूँ...

गोपू : ... कि हम चुपके-से दूसरे गाँव जाएँगे...

चुन्नीः ... कि हम चुपके-से दूसरे गाँव जाएँगे...

गोपू : ... और चुपके से टीवी देखकर आएँगे...

चुन्नीः (हँसी रोकते हुए) ... और चुपके-से टीवी देखकर आएँगे...

गोपू : ... और यह बात किसी को नहीं बताएँगे। माँ को भी नहीं।

लल्लूः (बीच में टोककर) माँ को कैसे बताएँगे? माँ तो सो रही है।

गोपू : हाँ, माँ तो सो रही है। अब मकोड़ा रख दे।

(चुन्नी मकोड़ा रख देती है। हाथ झाड़ती है।)

गोपू : (आगे बढ़ते हुए) तो फिर चलो।

(तीनों बच्चे कच्ची सड़क पर आगे बढ़ जाते हैं।)

सीन 2. पहाड़ की पगडंडी। दोपहर के 3 बजे हैं।

(बच्चे मेहनत से पहाड़ की पगडंडी चढ़ रहे हैं। सामने वाली एक चोटी पर टी.वी टॉवर दिख रहा है।)

गोपू : देखा? यही वो टॉवर है जिससे टीवी आता है।

लल्लूः आता कहाँ है? आता होता तो हम दूसरे गाँव क्यों जाते?

गोपू : चुन्नी, यह लल्लू एकदम लल्लू है ना? बाबा ने बताया था ना कि इसी टॉवर से दूसरे गाँव में टीवी आता है और क्योंकि हमारा गाँव पहाड़ के इस तरफ है, हमारे में नहीं आता है।

चुन्नीः हाँ, मेरे बापू ने तो बक्सा और एन्टीना भी खरीद लिया था... हमने एन्टीना को सब तरफ घुमाया.. पर टीवी पकड़ा ही नहीं।

गोपू : टीवी तो जादू है! ऐसे थोड़े-ही पकड़ेगा। हाय... क्या चीज़ है टीवी...

(गोपू टीवी की यादों में खोया हुआ आगे बढ़ता है, बाकी दोनों उसके पीछे-पीछे चल रहे हैं।)

सीन 3. मनोहर चाचा के घर का कमरा। सुबह के 8 बजे हैं।

(टीवी पर 26 जनवरी की परेड आ रही है। गोपू और उसके बाबा टकटकी लगाए देख रहे हैं। मनोहर चाचा बगल में बैठे हैं।)

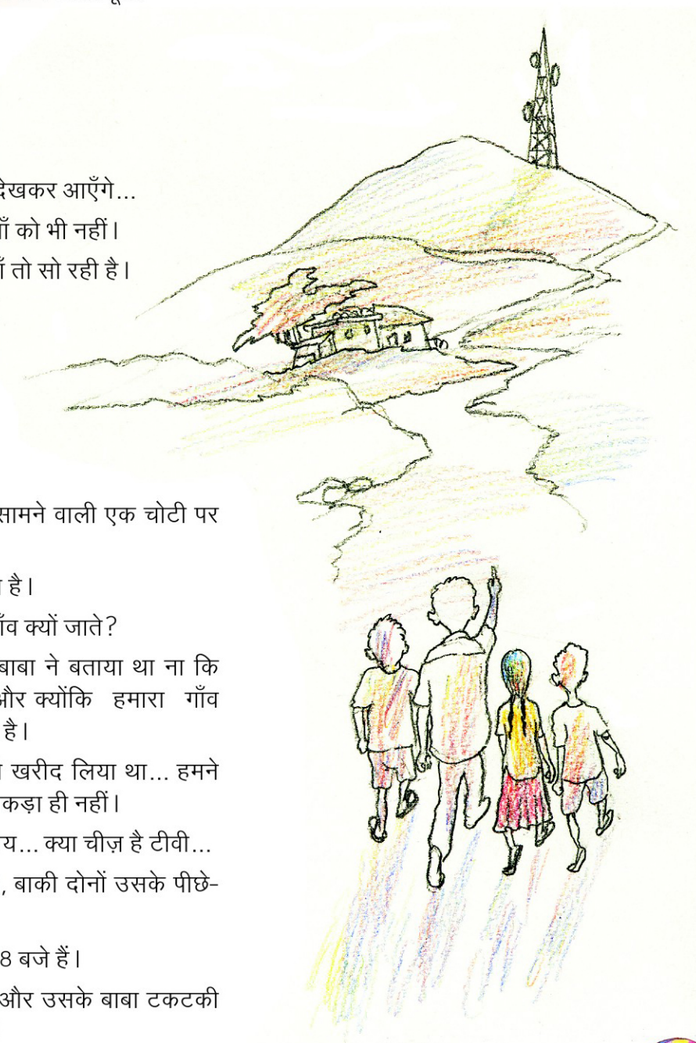

(टीवी में झाँकियाँ चल रही हैं, और एक कमेंट्री भी।)

टीवी से आती कमेंट्रीः और यह है झाँकी असम राज्य की... आगे आगे बीहू नृत्य करती महिलाएँ...

गोपू : बाबा यह आवाज़ कहाँ से आ रही है?

मनोहर चाचाः यह भी टीवी से ही आ रही है गोपू लाल!

गोपू : जादू है ना...!!

सीन 4. पहाड़ी सड़क। शाम के 4 बजे हैं।

(तीनों बच्चे सड़क किनारे चल रहे हैं।)

गोपू : जादू था... सचमुच! चलो अब सड़क पार करनी है।

(सड़क पार करने की कोशिश। सामने से तेज़ी से एक बस आती है। चुन्नी दौड़कर पार कर लेती है, गोपू और लल्लू खड़े रह जाते हैं।)

(बस में ज़ोर से ब्रेक लगता है। ड्राइवर गुस्से में सिर बाहर निकालता है।)

ड्राइवरः अबे देख के चलो...

(गोपू और लल्लू जल्दी-से सड़क पार करते हैं।)

चुन्नीः तुम लोग सच में छोटे बच्चे हो। सड़क पार करना भी नहीं आता?

गोपू : (झेंपते हुए) जल्दी चलो... अब देर हो रही है।

सीन 5. कस्बे की सब्ज़ी मण्डी। शाम के 5 बजे हैं।

(लल्लू सब्ज़ी मण्डी की भीड़ में थोड़ा पीछे रह गया है। गोपू और चुन्नी आगे चल रहे हैं। चुन्नी डरी हुई है।)

चुन्नीः तुमने कहा था जल्दी पहुँचेंगे... शाम तक वापस आएँगे...

गोपू : बस आने वाला है मनोहर चाचा का घर।

(चुन्नी एक लम्बे आदमी से टकरा जाती है। वो आदमी जल्दी में है, सम्भलते हुए आगे बढ़ जाता है।)

चुन्नीः (रुआँसी हो कर) कब से कह रहे हो आने वाला है।

गोपू : (पीछे मुड़कर) अरे ये लल्लू कहाँ रह गया। और तू रो मत अब.... टीवी देखना है ना? उसमें पता है – लोग बक्से के अन्दर बन्द होते हैं.... छोटे-छोटे दिखते हैं... तेरे मकोड़ों की तरह ...(लल्लू दिखता है) ए लल्लू... जल्दी आ ना!

(लल्लू दौड़ता हुआ आता है। तीनों हाथ पकड़कर चलने लगते हैं।)

सीन 6. कस्बे की गली। शाम का समय।

(बच्चे एक गली के मोड़ पर हैं। सामने कच्चे-पक्के मकानों की कतार है।)

गोपू : बस यही गली है। इसी में हैं मनोहर चाचा...

लल्लूः तो चलो...

गोपू : (मकानों को देखता हुआ) हाँ... लेकिन याद करने दो, कौन-सा घर है...

चुन्नीः पर कैसे...

गोपू : अरे, उस घर के ऊपर टीवी का डण्डा लगा हुआ है... एन्टीना!

(तीनों ध्यान से घरों को देखते हैं। गोपू का चेहरा उतर जाता है।)

गोपू : पर यहाँ तो...

लल्लूः सबकी छत पे लगा है!

चुन्नीः टीवी वाला डण्डा! अब क्या करेंगे?

गोपू : (हिम्मत हारते हुए) पता नहीं। मनोहर चाचा ने तो बताया था उनके घर ही टीवी है... पर यहाँ तो सबके घर है।

लल्लूः (बेहद हताश) अब हम वापस चलें? (आसमान देखते हुए) नहीं? अँधेरा हो रहा है।

चुन्नीः हम खो गए।

(गोपू कुछ नहीं बोलता, बस रोने लगता है। बाकी दोनों भी रोने लगते हैं।)

सीन 7. कस्बे की सड़क। देर शाम का समय।

(भीड़ जमा है। बच्चे रो रहे हैं। कस्बे के लोग उन्हें चुप करा रहे हैं।)

कस्बेवाला 1ः कहते हैं मनोहर चाचा से मिलने आए हैं... कीरतपुर से..

कस्बेवाला 2ः अब चुप हो जाओ। डरो मत। क्या नाम है तुम्हारा?

लल्लूः लल्लू!

चुन्नीः (रोते हुए) मुझे घर जाना है।

मनोहर चाचा आ जाते हैं। गोपू को उठा लेते हैं।

मनोहरः अरे गोपू... तुम अकेले कैसे आ गए?

गोपूः टीवी देखना था। हम तीनों को।

(कस्बे वाले एक-दूसरे का मुँह देखते हैं। मनोहर बच्चों को ले जाता है।)

सीन 8. मनोहर चाचा का घर। रात का समय।

(बाबा ने गोपू को गोद में बिठाया है। चुन्नी और लल्लू भी बैठे हैं।)

बाबा : (मनोहर को) गोपू शैतान है, यह सबको पता है। पर इतना शैतान... हमने सोचा नहीं था।

मनोहर : और पूरा रास्ता याद था इसे! चलो भई... अब टीवी चलाया जाए...। इतनी दूर से आए हैं तीन दीवाने।

(मनोहर टीवी चलाते हैं। गोपू, लल्लू और चुन्नी सीधे होकर बैठ जाते हैं। टीवी से आवाज़ आती है... तस्वीर दिखना अभी बाकी है।)

टीवी की आवाज़ः और मद्रास का अधिकतम तापमान रहा 34 डिग्री...

(गोपू की आँखें फैल रही हैं। टीवी के शीशे पर हल्की-हल्की रोशनी भी फैल रही है। तस्वीरें किसी भी पल दिख जाएँगी।)

(और तभी, बिजली चली जाती है। घुप्प अँधेरा हो जाता है।)

गोपू, चुन्नी और लल्लूः (एक साथ, अँधेरे में) हे भगवान!